आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received: 20/09/2024; Published: 26/09/2024

पुस्तक समीक्षा

पतंग, स्त्री और डोर

- डॉ.नीलिमा रंजन
भोपाल

आज बात करेंगे शिक्षा व साहित्य की विभिन्न विधाओं में ५० से अधिक पुस्तकों की रचनाकार , प्रतिष्ठित कमलेश्वर, विवेकानंद, शिक्षा रश्मि सहित अनेक सम्मान प्राप्त भोपाल की डॉ लता अग्रवाल तुलजा की एक कहानी की । शीर्षक है पतंग, स्त्री और डोर। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि यह कहानी स्त्री विमर्श को लेकर लिखी गई है। यह कहानी एक परिवार की है पिता अजय, विमाता अरुणा बेटी नीरू और बेटे वीरू की । कहानी है अरुणा की ज़ुबानी।

जब अरुणा ब्याह कर आई तो अजय की पत्नी स्वर्ग सिधार चुकी थी और वह बारह वर्ष की नीरू और छोटे वीरू की देखभाल के लिए उनके पिता अजय की पत्नी बनकर १3 वर्ष पूर्व इस घर में आ गई थी। लड़कियाँ भावनात्मक रूप से वय से पूर्व ही बड़ी हो जाती हैं और बिन माँ की, विमाता की देख रेख में पली अब २५ वर्ष की आयु में संवेदनशील नीरू हृदय से विद्रोही और आक्रामक हो चुकी है। विवाह के तेरह वर्ष बाद अजय की अरुणा से अपेक्षा है कि वह नीरू को नियंत्रित रखें क्योंकि वह किसी लड़के के प्यार में पड़ चुकी है और अजय के अनुसार वह लड़का भला नहीं है तो वह यानी अरुणा नीरू को उस लड़के के साथ घूमने फिरने से रोके । यहाँ स्थिति यह है कि नीरू पिता से स्पष्ट बहस कर चुकी है , अरुणा से वह बात ही नहीं करना चाहती और उसकी हर बात का उत्तर वह एक शब्द में ही देती है । पिता बेटी के बीच चल रही बहस से उसके हृदय की धड़कनों का आवेग कढ़ानी में सिकते तिल जैसा ही तड़तड़ा रहा है। वह अजय से कह चुकी है कि बेटी पर संदेह करने से अच्छा होगा कि वह स्वयं उससे बात करे।और हताश अजय का कहना है कि अपने खोटे सिक्के को ही सम्हालना है। और नीरू की बात - आख़िर बुराई क्या है पापा रितेश में , कितना हैं-हैंडसम है वह।

और पिता अजय की अंतिम चेतावनी- जब तक उसका भूत तुम्हारे सिर से उतर नहीं जाता तुम्हारा घर से निकलना बंद।

ृरुणा के मन का अंतर्द्वंद्व उसे आगे बढ़ नीरू को समझाने में झिझक रहा है क्योंकि इतने वर्षों की तपस्या के बाद भी आज तक नीरू ने उसे माँ कहकर नहीं पुकारा है। दोनों के लिए यह सह अस्तित्व सरल नहीं रहा है। किंतु १२ वर्ष की नीरू के मन में उसकी अपनी माँ रची बसी है। विमाता अरुणा और नीरू के बीच उड़ती पतंगों को देख संवाद स्त्री मन को समझा देता है। नीरू का कथन -

मुझे पसंद नहीं पतंग का डोर में बँधा होना ।

बस पसंद है पतंग की ऊँची उड़ान और खुला आसमान। बहुत ऊपर उड़ना चाहती हूँ ताकि मुझे रोकने वाला कोई ना हो।

सुनकर अरुणा एक और सोच में पड़ जाती है कि हर स्त्री का अतीत क्या एक सा ही होता है, कभी ना मिलने वाले आकाश का, ऊँची उड़ान का। पिता बेटी की तकरार के बाद वह डरी हुई सी थी पर नीरू से बात करना भी ज़रूरी था

यहाँ डर था १३ सालों पहले मिले विमाता के तमग़े को लेकर नीरू को समझाने पूछने की अनधिकृत चेष्टा की और फिर अरुणा और नीरू का संवाद छत पर रंग बिरंगी पतंगों को देखते हुए । पतंगों के लड़ते पेंच को देख अरुणा भारी मन से कह बैठती है - दोनों में से किसी एक की तक़दीर में कटना लिखा है।

वह समझाती है कि जिस डोर को नीरू बंधन मान रही है वह सुरक्षा कवच है । इस बीच एक पीली पतंग के कटने पर नीरू चिंता में पड़ जाती है कि उस कटी पतंग का क्या भविष्य होगा। उसकी इस बात का उत्तर जीवन दर्शन है सुनिए इसे लता जी के शब्दों में - या तो वह पतंग किसी पेड़ की टहनी पर अटक कर तार तार हो जाएगी और अगर नीचे ज़मानत पर आ गिरी तो न जाने कितने लुटेरों के हाथों का खिलौना बन जाएगी ——

-तब लोगों के पैरों की कुचलन या हवा उसकी दिशा तय करेगी ।

कटी पतंग के इस दर्द को शिद्दत से महसूस करने वाली अरुणा को नीरू पहली बार एक स्त्री तौर पर देख पाती है जब अरुणा दबे स्वरों में बता देती है कि एक नादान लड़की की कहानी जो बिन डोर की पतंग सी बिन विचारे अपने प्रेमी अनजान इंसान के साथ निकल गई और वह खिलवाड़ कर समाज की ठोकरें खाने छोड़ गया। रोकते रोकते उसके मुँह से निकल जाता है कि वह लड़की जिंदा है क्योंकि उसे एक सुलझे विचारों वाला जीवन साथी मिल गया किंतु - कितनी अरुणाओं को अजय मिला है ।

नीरू को ग़लत राह पर जाने से रोकने के लिए अपने अतीत के अप्रिय पन्नों को खोलने का साहस एक माँ ही कर सकती है और नीरू माँ पुकार कर अरुणा के गले लग जाती है।

सशक्त कथावस्तु है एक केंद्रीय संदेश है - विमाता सदा बुरी नहीं होती और प्रेम भी समझदारी से किया जाना चाहिए, यह बात कहना सरल है पर इसे निबाहना कठिन है। लेखिका की सफलता इसमें है कि उसका दृष्टिकोण ही पाठक का दृष्टिकोण बन जाता है। पतंग को स्त्री का पर्याय बताया गया है या कहें तो प्रतीक माना गया है। एक कठिन स्थिति को प्रतीकों के माध्यम से हल करना सरल नहीं था तो जीवन के पन्ने भी उलटे गए । समाधान के बाद पात्रों के विदा लेने का समय एक पंक्ति में सिमट गया जो अपने आप में एक पैरा या एक नई

कहानी को जन्म दे सकता है। कहानी में तनाव के स्वर इसे प्रभावी बनाए रखते हैं। बिना अधिक अलंकरण, सरल भाषा में साफ़ सुथरी पंक्तियों में लिखी इस कहानी में विषय के अनुरूप शब्दों का चुनाव किया गया है। कहानी उद्देश्यपरक है और रोचक भी । बढ़िया रचना के लिए लता अग्रवाल जी को बहुत बहुत बधाई और भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ ।

****